International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2014; 1(1): 60-62

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

✓ Indexed Journal
✓ Refereed Journal
✓ Peer Reviewed Journal

JEZS 2014; 1(1): 60-62
© 2014 IJMRD
Received: 20-05-2014
Accepted: 31-05-2014
ISSN: 2349-4182

डॉ. भगत सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रा।

श्रीमति सरिता आर्य
''श्रीमति सरिता आर्य, प्राध्यापिका, राजकीय महाविद्यालय, घरौंड़ा।

पारस्कर गृह्यसूत्रा में उपनयन संस्कारः एक चिन्तन

डॉ. भगत सिंह, श्रीमति सरिता आर्य

वेदों के अध्ययन में सहायक शास्त्रा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, निरूक्त को वेदाचैंú कहा जाता है। इनमें से 'शिक्षा' नामक वेदाचैंú वेद मन्त्राों के शु(पाठ में, 'कल्प' वेद मन्त्राों के कर्मकाण्डीय और यज्ञीय अनुष्ठान के ज्ञान के लिये, निरूक्त वेद मन्त्राों में आये वैदिक पदों ;शब्दोंद्ध के अर्थ का ज्ञान कराने में, 'छन्द' वैदिक मन्त्राों में प्रयुक्त छन्दों के ज्ञान के लिए, ज्योतिष यज्ञ और अनुष्ठान आदि विभिन्न क्रियाओं के लिए उपयुक्त काल और मुहुर्त का ज्ञान कराने में अत्यध्कि सहायता प्रदान करता है।[1]

उपर्युक्त छः वेदाचैंúों में 'कल्प' अपना भिन्न स्थान रखता है क्योंकि जहाँ शेष वेदाचैंúों में वेदों की सभी शाखाओं से सम्बन्धित सामग्री सम्मिलित रूप में मिलती है वहाँ कल्पसूत्राों में केवल अपनी शाखा से ही सम्बन्धित सामग्री मिलती है जो वृहद् ज्ञान का भण्डार है।[2]

ब्राह्मणों के याज्ञिक विधनों को 'कल्प' कहा जाता है। 'सूत्रा'[3] शब्द का अर्थ है– 'विचारों का संक्षिप्त रूप' इस प्रकार 'कल्पसूत्रा' से तात्पर्य है वे रचनाएँ जिसमें ब्राह्मणों के याज्ञिक विधन को अति संक्षिप्त वाक्यों में प्रस्तुत किया गया है। 'इन्हीं' कल्पसूत्राों को संक्षेप में, केवल 'सूत्रा' भी कह दिया जाता है।
कल्पसूत्रा चार प्रकार के हैं

1.	श्रौत सूत्रा	2.	ध्र्मसूत्रा
2.	गृह्य सूत्रा	4.	शुल्वसूत्रा[4]

श्रौत सूत्राों में श्रुतियों वे प्रतिपादित याज्ञिक विध्–िविधन का, ध्र्मसूत्रा में व्यक्ति के सामाजिक जीवन और सामाजिक आचार व्यवहार का, गृह्यसूत्राों में गृह में होने वाले यज्ञों और संस्कारों का, शुल्वसूत्राों में वेदिका और मण्डप आदि के निर्माण के लिये उचित लम्बाई–चौड़ाई और उनके बनाने की विध् िआदि का विवरण मिलता है। गृह्यसूत्राों में प •चमहायज्ञों का विवरण और उनकी विध् िविस्तार से दी गयी है, इन्हें गृहस्थ जीवन की आचार–संहिता भी कहा जाता है।[5] इसमें मनुष्य जीवन में होने वाले 16 संस्कारों का विवेचन किया गया है। उपलब्ध् गृह्यसूत्रा इस प्रकार हैंः–

)ग्वेद से सम्बन्धित[6]ः– आश्वलायन गृह्यसूत्रा, शांखयन गृह्यसूत्रा व कौषीतकि गृह्यसूत्रा।
यजुर्वेद से सम्बन्धित–पारस्कर गृह्यसूत्रा, बौधयन गृह्यसूत्रा, आपस्तम्ब गृह्यसूत्रा, भरद्वाज गृह्यसूत्रा।
सामवेद पर आधरितः– गोभिल गृह्यसूत्रा, जैमिनीय गृह्यसूत्रा[7]
अथर्ववेद पर आधरितः– कौशिक गृह्यसूत्रा।[8]

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति एवम् अर्थ

'संस्कार' शब्द सम् उपसर्गपूर्वक कृं धतु से '६ •ा' प्रत्यय लगाने पर 'संपरिभ्यां करौतौ भूषणे'– इस पाणिनीय सूत्रा से भूषण अर्थ में 'सुट्टò' ;सद्ध आगम् करने पर सि(होता है। इसका अर्थ है– 'संस्करण, 'परिष्करण, 'विमलीकरण' तथा विशु(िकरण आदि। 'इस' अर्थ के द्योतक अन्य शब्दों का व्यवहार भी)ग्वेदादि ग्रन्थों में दृष्टिगोचर होता है। 'शतपथ–ब्राह्मण' में 'संस्कुरू')ग्वेद में संस्कृत शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'संस्कार' शब्द प्राचीन वैदिक साहित्य में नहीं मिलता है। 'जैमिनी' के सूत्राों में 'संस्कार' शब्द अनेक बार आया है[9] और सभी स्थलों पर संस्कार शब्द यज्ञ के पवित्रा या निर्मल कार्य के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। जैमिनी सूत्राों की व्याख्या में शबर ने 'संस्कार' शब्द का अर्थ बताते हुए कहा है कि 'संस्कारो नाम स भवति यस्मिन्जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य' अर्थात् संस्कार वह है जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के योग्य हो जाता है।[10] तन्त्रावार्तिक के अनुसार 'योग्यतां चादधनाः क्रियाः संस्कारा इत्युच्यन्ते' अर्थात् संस्कार वे क्रियाएँ तथा रीतियाँ हैं जो योग्यता प्रदान करती है।

संस्कारों की संख्या

विद्वानों में संस्कारों की संख्या के विषय में मतभेद पाया जाता है। 'पारस्कर गृह्यसूत्रा' और 'मनुस्मृति' के अनुसार तेरह संस्कारों को वर्णन किया गया है। 'आश्वलायन' के अनुसार 11 तथा वैरवानस के अनुसार 18 संस्कारों का वर्णन किया गया है। 'पारस्कर' गृह्यसूत्रा[11] में विवाह से लेकर समावर्तन पर्यन्त दैहिक संस्कारों का वर्णन किया गया है। जिसमें विवाह, गर्भाधन, पुंसवन, जातकर्म,

Correspondence:
डॉ. भगत सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रा।

समिन्तोन्नयन, नामाकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चुड़ाकरण, उपनयन, केशान्त, समावर्तन, अन्त्येष्टि संस्कार सम्मिलिति हैं।

उपनयन शब्द का विकास एवं अर्थ

पारस्कर गृह्यसूत्रा के[12] अनुसार उपनयन का अभिप्राय बालक को आचार्य के पास ले जाकर उसे छात्रा जीवन में प्रविष्ट कराना है। अपस्तम्ब ध्र्मसूत्रा[13] के अनुसार उपनयन संस्कार उसका किया जाता है जो विद्या को सीखना चाहता है। इसमें विद्या सीखने वाले को सावित्राी मन्त्रा का उच्चारण तथा ज्ञान करवाया जाता है।

उपनयन का समय

'पारस्कर– गृह्यसूत्रा'[14] के अनुसार ब्राह्मण बालक का उपनयन संस्कार जन्म के आठवें या गर्भ के आठवें वर्ष, क्षत्रिय कुमार का 11वें और वैश्य बालक का 12वे वर्ष में करना चाहिए। 'अग्निवेश्य गृह्यसूत्रा'[15] के अनुसार ब्राह्मण का उपनयन 7वें वर्ष में, क्षत्रिय का 11वें वर्ष में तथा वैश्य का 12वें वर्ष में करना चाहिए। इस ग्रंथ में गुण कर्म के अनुसार उपनयन संस्कार करवाने से सम्बन्ध्ति)तुओं का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि ब्राह्मण का उपनयन बसन्त में, क्षत्रिय का ग्रीष्म में तथा वश्य का शरद)तु में करना चाहिए।[16]

उपनयन संस्कार विध्

पारस्कर गृह्यसूत्रा[17] के अनुसार उपनयन संस्कार में सर्वप्रथम तीन ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए तथा उस बालक को जिसका उपनयन कराना हो भोजन करवाकर, सिर के बाल मुँडवाकर, वस्त्राादि से अलंकृत करके आचार्य के पास लाते हैं। बालक को अग्नि के पश्चिम में बैठाकर आचार्य स्वयं अग्नि के दक्षिण में बैठता है। वहाँ पर 'ब्रह्मचर्यमागाम् तथा ब्रह्मचार्यसानि' ये दो वाक्य आचार्य बालक से कहलवाते हैं। इसके बाद 'येनेन्द्राय––––' इस मन्त्रा को पढ़कर आचार्य बालक को वस्त्रा पहनाता है। ––––––––––– तत्पश्चात् मु×ज की मेखला को इस मन्त्रा 'मेखला बध्नाति इयं–––––––––।' आदि मन्त्रा के साथ कटि प्रदेश में बांध्ते हैं।[18]

मनुस्मृति[19] तथा आपस्तम्ब–ध्र्मसूत्रा में भी मु×ज की मेखला की विधन मिलता है। इसके बाद आचार्य बालक के बायें कन्ध्े के ऊपर से तथा दाहिने हाथ के नीचे से यज्ञोपवीत को ध्रण करवाता है।[20] यज्ञोपवीत के बाद बालक को बिना मन्त्रा पाठ के मृगचर्म ;अजिनद्ध ध्रण करवाते हैं। तदनन्तर बालक को आचार्य दण्ड प्रदान करता है।[21] 'पारस्कर गृह्यसूत्रा'[22] के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य के लिये क्रम से पलाश, उदुम्बर, व बिल्व का दण्ड होना चाहिए इसके बाद 'आपोष्ठा–––––––––' प्रभृति तीन)चाएँ पढ़कर आचार्य अपनी अ×जलि में स्थित जल बालक की अ×जलि में देने के बाद वह 'तत्चक्षु' मन्त्रा पढ़कर सूर्यदर्शन कराता है।[23] अब बालक अपने दाहिने कन्ध्े के ऊपर से अपने दाहिने हाथ को ले जाकर 'मम् व्रते––––' मन्त्रा पढ़ते हुए हृदय को स्पर्श करता है।[24] हृदय स्पर्श करने के उपरान्त आचार्य ब्रह्मचारी से नाम पूछता है। ब्रह्मचारी अपना नाम बताकर अग्नि की प्रदक्षिणा करके पश्चिम की ओर तथा आचार्य उत्तर की ओर बैठ जाता है। इसके बाद ब्रह्मचारी को वस्त्राादि ध्रण करके अग्नि की परिक्रमा करके बैठना चाहिए।

बालक को व्यहृति ; द्ध बोलनी चाहिए। पहले एक, पिफर दो तथा पिफर तीन व्याहृतियों का प्रयोग करना चाहिए। बाद में आचार्य बालक को सावित्राी–मंत्रा के विषय में बताएं।[25] ब्रह्मचारी के द्वारा उन आहुतियों के लिए समिधओं का आधन किया जाता है।[26] वह अग्नि को दाहिने हाथ से ग्रहण करता है तथा अग्नि के चारों ओर सेंचन सम्बन्धी कार्य करके अग्नि के सामने पहली–दूसरी तथा तीसरी समिध के मन्त्रा के साथ आधन करता है। अब वह सात बार अपने हाथों को तपाकर अपने मुख को स्पर्श करता है।[27] समिदाधन विध् की समाप्ति के बाद भिक्षा–चर्या का विधन किया गया है।[28]

'पारस्कर गृह्यसूत्रा'[29] तथा 'मनुस्मृति'[30] में ब्रह्मचारी को भिक्षा मांगते समय 'भवति' शब्द को प्रारम्भ में, क्षत्रिय को मध्य में तथा वैश्य बालक को अन्त में कहना चाहिए। सर्वप्रथम उसको भिक्षा माता, बहिन या मौसी से मांगनी चाहिए जो इन्कार न कर सके।[31] भिक्षा में प्राप्त ध्न आदि को ब्रह्मचारी, आचार्य को सौंपकर मौन खड़ा रहता है। आचार्य उस भिक्षा को बहुत अच्छी बताता है। बाद में वह ब्रह्मचारी अपने मौन को त्यागने के लिए वृक्ष को कष्ट पहुँचाये बिना स्वयं टूटी हुई समिधएँ वन से लाकर उसी अग्नि में पूर्ववत् समिध दान कर मौन का त्याग करे।[32]

ब्रह्मचारी के नियम

'पारस्कर गृह्यसूत्रा', 'मनस्मृति' तथा 'शाखायन– गृह्यसूत्रा' इन सभी ग्रन्थों में ब्रह्मचारी के नियमों का वर्णन किया गया है। ब्रह्मचारी को भूमि पर शयन करना चाहिए, मृगचर्म, यज्ञोपवीत तथा मेखला भी सदैव ध्रण करनी चाहिए तथा क्षार अध्कि नमक वाले भोजन का ग्रहण भी नहीं करना चाहिए।

अग्नि की परिचर्या करनी चाहिए। गुरू सेवा और भिक्षाचरण भी नित्य करना चाहिए। मांस, स्नान ;नदी मेंद्ध स्त्रीगमन तथा मिथ्या भाषण को त्याग देना चाहिये और 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वेदाध्ययन करें[33], किन्तु आधुनिक समय में ये उपयुक्त नहीं है।

ब्रह्मचारी के वस्त्रा

ब्रह्मचारी के वस्त्राों को दो भागों में बाँटा गया है। एक अधेभाग के लिए, दूसरा ऊपरी भाग के लिए।

'आपस्तम्ब– गृह्यसूत्रा' के अनुसार ब्राह्मण के लिए सूत का बना हुआ, क्षत्रिय के लिए सन से बना हुआ तथा वैश्य के लिए मृगचर्म का बना वस्त्रा होना चाहिए।[34]

उपनयन संस्कार का प्रयोजन

शिक्षा प्राप्त करने के लिये उपनयन संस्कार किया जाता है, ब्रह्मवर्चस की कामना, सांसारिक अभ्युदय की कामना, दीर्घायु की प्राप्ति के लिए उपनयन संस्कार किया जाता है। पारस्कर गृह्यसूत्रा के एक मन्त्रा[35] में उपनयन संस्कार प्रयोजन को बताते हुए कहा गया है–––––––– मैं आयु, मेध, तेज, सन्तान, पशु–ध्न आदि से दीप्तिमान् हो उठूँ इस प्रकार कहा गया है।

उपनयन संस्कार की वर्तमान में प्रासंगिकता

उपनयन संस्कार का महत्त्व शिक्षा की दृष्टि से बहुत अध्कि है। आज हम शिक्षा के लिए निम्नलिखित वस्तुओं को आधर मानते हैं:–

1. परिस्थिति
2. शिष्य अथवा ब्रह्मचारी
3. गुरू अथवा आचार्य
4. अध्यापन के विषय
5. अध्यापन की विध्

आजकल की शिक्षा प(ति के अनुसार विद्यार्थी का या बालक का समुचित विकास हो सके, इसके लिए उस पर परिस्थित का प्रभाव

बहुत अध्कि होता है। घर में माता–पिता बालक की शिक्षा पर उचित ध्यान दे भी सके तो समाज अर्थात् आस–पास के परिवेश का असर उस पर अध्कि होता है जो नकारात्मक हो सकता है। अतः उसका पूर्ण विकास नहीं हो सकता। अतः उसका पूर्ण विकास नहीं हो सकता। अतः इस समस्या का हल करने के लिए वैदिक काल में गुरूकुल प(ति का निर्माण किया गया था क्योंकि)षियों का विचार था कि घर में शिक्षा समुचित रूप से संभव नहीं। अतः बालक को शिक्षा प्राप्ति के लिए बाहर भेजा जाए। जो आज भी प्रासंगिक है परन्तु स्वरूप में बुनियादी भिन्नताएँ हैं।

वैदिक)षियों ने उपनयन के पश्चात् जो विद्या ग्रहण करने के लिये विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया उसका मुख्य उद्देश्य चरित्रा निर्माण माना गया, उनके लिये भौतिक विद्याओं के अध्ययन के साथ–साथ परा विद्या अर्थात् आत्मा की विद्या सिखना ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक था। आज के समय में केवल भौतिक विद्याओं के पठन–पाठन से समाज में अनैतिकता का ह्रास हो रहा है। अतः आज के जीवन में इस संस्कार का महत्त्व और अध्कि बढ़ जाता है।

संदर्भ सूची

1 वैदिक साहित्य का इतिहास, पृ0 116
2 वहीं, पृ0 117
3 वैदिक साहित्य का इतिहास, पृ0 119
4 वहीं,
5 वैदिक साहित्य का इतिहास, पृ0 120
6 वहीं, पृ0 118
7 सस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ0 76
8 वहीं, पृ0 76
9 जैमिनी सूत्राय 3/1/13, 3/2/15, 3/8/3, 9/2/9, 9/3/25 आदि
10 वहीं, 3/1/13
11 पारस्कर गृह्यसूत्राय पृ0 32
12 पारस्कर गृह्यसूत्राय, 2.2.4.
13 आपस्तम्ब ध्र्मसूत्राय 1.1.1.9–10 उपनयनं विधर्थस्यश्रुतिर्थस्य श्रुति संस्कार सर्वेभ्यो वै वेदेभ्यस्सवि×यनृच्य इति हि ब्राह्मणम्।
14 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.2.1–4– अष्टवर्ष ब्राह्मणमुपनयेद्गर्भाष्टमे वा एकादशवर्षराजन्यां द्वादश वैश्यम्।
15 आश्वलायन गृह्यसूत्राय 1.1.– सप्तमे वर्षे ब्राह्मणमुपनयीतैका दशवर्षे राजन्यम् द्वादशे वर्षे वैश्यम्।
16 वहीं – वसन्ते ब्राह्मणं गीष्मे राजन्यं शरदिं वैश्यम्।
17 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.2. 5–6– ब्राह्मणान् भोजयेत्तं च पर्युप्तशिरसमलड्0कृतमानयन्ति पश्चादग्नेरवस्थाप्य ब्रह्मचर्यमागामिति वाचयति ब्रह्मचार्यसानीति च।
18 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.2.11. मेखला बध्नीते इयं दुरुक्तं परिबाध्माना वर्ण पवित्रां पुनती म आगात्।
19 मनुस्मृतिय 2.42–43, आ0 ध्0 सू0 1.1.2.35–37
20 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.2.11. यज्ञोपवीतं परम पवित्रां प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
21 वहीं, 2.2.12, यो मे दण्डः परापतद्वैहाय–––ब्राह्मणे ब्रह्मवर्चसायेति।
22 वहीं, 2.2.13 दीक्षावदेके दीर्घसत्रामुपैतीति वचनात्।।
23 वहीं, 2.2.14–15 सूर्यमुदीक्षयति तत्च्वुक्षुरिति 115
24 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.16 अथास्य दक्षिणा समिध हृदयमालभते–मम् व्रते ते हृदयं दध्मीति––––––मह्यमिति।
25 शतपथ ब्राह्ममणय 2.5 – सवत्सरे सावित्रिमन्वाह–त्रिरात्रोआथास्मै सावित्रिमन्वाह तत्सविर्तुरेण्यं मित्येतो।
26 पारस्कर गृह्यसूत्रायय 2.4.1. अत्रा समिदाधनम्।
27 वहींय 2.4.7–8 अचैं0न्यालभ्य जपत्यचैं0नि च म आप्यायन्तां वाक् प्राणश्चक्षुः श्रोत्रां––––––प्रतिमन्त्राम्।
28 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.5.3–4 ;1द्ध भवति भिक्षां देहि ;2द्ध भिक्षां भवति देहि। भावार्थ पृ0 256.;3द्ध भिक्षां भवति।
29 वहींय 2.5 –4 भवत्पूर्वां ब्राह्मणो भिक्षेत।। भवन्मध्याराजन्यः।। ;भवदन्त्यां वैश्यःद्ध।।
30 मनुस्मृतिय 1.36
31 वहींय 2.50 मातरं वा स्वसारं वा मातुर्वा भगिनीं निजाम भक्षेत भिक्षा प्रथमा या चैनं नार्विमानयेत्।
32 पारस्कर गृह्यसूत्राय य 2.5.8. अहिंसन्नरण्यात्समिध् आह्रत्य तस्मिन्नग्नौ पूर्ववदाधय वाचं विसृजते।
33 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.5.10–12 अध्ः शाययक्षारालवणातीस्यात्––––भिक्षाचर्या मध्मासमज्जनो––––––स्त्रीगमनानृतादत्तादानानिवा। ध्र्मशास्त्रा का इतिहास
34 आपस्तम्ब ध्र्मसूत्राय 1.1.3.11– अन्यायाधीनस्यदन्यत्रापत्नोयेभ्य सूत्रातः– वापयोवितरान्।
35 पारस्कर गृह्यसूत्राय 2.4.6 अग्नये–––––––ब्रह्मवचर्सस्यन्नादो भूयास स्वाहेति।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

क्रम संख्या	मूल ग्रंथ	सम्पादक	प्रकाशन
1.	अग्निवेश्य सूत्रा	एल0ए0 रवि शर्मा	भास्कर प्रैस त्रिवेन्द्रम प्रथम संस्करण. 1940
2.	आपस्तम्ब गृह्यसूत्रा	श्री हरिदत्त शास्त्री	चौरवम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी वि0 स0 202
3.	आश्वलायन गृह्यसूत्रा	डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री डॉ0 एन0 एन0 शर्मा	इस्टर्न बुक लिंकस्स दिल्ली प्र0. 1976
4.	जैमिनी सूत्रा	शबर भाष्य	चौखम्बा सीरिज वाराणसी
5.	ध्र्मशास्त्रा का इतिहास ;प्रथम भागद्ध	डॉ0 पाण्डुरंग काणे	उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान
6.	पारस्कर– गृह्यसूत्रा	डॉ0 ओमप्रकाश पाण्डेय	चौखम्बा अमरभारती प्रथम संस्करण– 1980, वाराणसी
7.	मनुस्मृति	वासुदेव शर्मा	बालकृष्ण रामचन्द्र
8.	शतपथ ब्राह्मण	गंगा प्रसाद उपाध्याय	दिल्ली 1969
9.	वैदिक साहित्य का इतिहास वैदिक साहित्य का आलोचनात्मक सि(ान्त	डॉ0 कर्ण सिंह	साहित्य भण्डार, मेरठ